गड़े मुर्दे निकाले जा रहे हैं।

प्रतिभा त्रिपाठी

गड़े मुर्दे निकाले जा रहे हैं।
पुराने ज़ख्म पाले जा रहे हैं।

कदर जिनको नहीं रिश्तों की बाबत
वही पत्थर उछाले जा रहे हैं।

कई बातों में बातें पक रही हैं
मिलाए कुछ मसाले जा रहे ।

मिटालो भूख की इस वहशियत को
यहां सबके निवाले जा रहे हैं ।

शराफत की कहीं कीमत नहीं थी
मुलाजिम नोंच डाले जा रहे हैं।

छुपे हैं राज़ तहखानों में जितने
सियासत में खंगाले जा रहे हैं ।

बगावत की हवा अब बह रही है
गदर के बीज डाले जा रहे हैं।

जुबां पर ,देश के भाषण बचे हैं
कहां जाहिल बिठाले जा रहे हैं

चरागों के लिए भी पैरवी हो
चमन से सब उजाले जा रहे हैं।

बादलों में शहर ढूंढना है मुझे।

बादलों में शहर ढूंढना है मुझे।
जिंदगी में गुजर ढूंढना है मुझे।

चांदनी रोज चुप करके जलती रही
रोशनी की पहर ढूंढना है मुझे।

इत्तेफाकन मुझे एक हर मिलते रहे
अब खुशी की लहर ढूंढना है मुझे।

मुझको उड़ना पड़ा दूर तक आसमां
अब दरख्तों पर घर ढूंढना है मुझे।

बूंद आंखों में थी पर बरस न सकी
बारिशों का सफर ढूंढना है मुझे।

तेरी महफिल में दुनिया बड़ा शोर है
इसमें अपनी खबर ढूंढना है मुझे।

राह में मुश्किलों से निबटते हुए
मंजिलों की डगर ढूंढना है मुझे।

मेरठ, उत्तर प्रदेश

ISSN:2583-8849